International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 11, Nov 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्राथमिक स्तर पर भारतीय शिक्षा में वर्तमान परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली का अध्ययन

मोर पाल सिंह
शोधार्थी
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड।

प्रो. रूचि हरीश आर्या
शिक्षाशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

सारांश

प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली प्रगति को मापने का आधार परीक्षण एवं सम्बन्धित प्रगति को दर्शाने का आधार आंकलन होता हैं। परीक्षण वह विधि है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को मापा जाता है। आंकलन इन परीक्षणों में किन्हीं पूर्व निर्धारित मानकों के सापेक्ष विद्यार्थियों द्वारा दर्शायी गयी वर्तमान स्थिति को कहते हैं। इसी स्थिति के सापेक्षिक आंकलन द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को प्रदर्शित करते हैं। प्रतिशत–अंकों के रूप में किये जाने वाले आंकलन में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को एक मानक प्रतिशत स्थिति के सापेक्ष उनके द्वारा अर्जित वर्तमान प्रतिशत के रूप में दर्शाया जाता है, उदाहरण– मौखिक अथवा लिखित परीक्षा में 100 प्रतिशत अंकों में से विद्यार्थियों द्वारा अर्जित 50 प्रतिशत–अंक, परीक्षा में पूछी जाने वाली जानकारी ही उनके द्वारा अर्द्ध–ज्ञानार्जन की स्थिति को दर्शाता है। प्रतिशतांक द्वारा परीक्षा में प्राप्त प्रतिशत–अंकों के आधार पर इसमें सम्मिलित सभी व्यक्यिों में से किसी व्यक्ति–विशेष द्वारा अर्जित की जाने वाली सापेक्षित स्थिति को दर्शाया जाता है। न्यूनतम अधिगम स्तर किसी विद्यार्थी द्वारा कम से कम एक निर्धारित स्तर तक अर्जित की जाने वाजी अधिगम दक्षता की अनिवार्य सीमा को दर्शाता है। ग्रेडिंग में विद्यार्थियों को उनके सर्वागींण प्रदर्शन के आधार पर ग्रेड प्रदान किये जाते हैं। अधिगम संकेतक विद्यार्थियों के अधिगम हेतु संकेतकों के रूप में स्थापित किये गये मार्गदर्शी बिन्दुओं को प्रदर्शित करते है, तथा अधिगम परिणाम जोकि दक्षताओं के सूक्ष्म भागों में से सन्दर्भ बिन्दुओं के रूप में परिभाषित किये गये नवीनतम मानक हैं जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुसार ही उनका विकास करते हुए व्यावहारिक कौशलों को प्राप्त करना है। वर्तमान अध्ययन हेतु *द्वितीयक प्रदत्त विश्लेषण विधि* का प्रयोग किया गया है। जिसके लिए शोधार्थी ने विभिन्न शोध पत्रिकाओं, शोध–लेखों, सम्बन्धित शिक्षा नीति से सम्बन्धित दस्तावेजों एवं पाठ्यचर्या रूपरेखाओं का अध्ययन किया है। अध्ययन में पाया गया कि

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भारतीय शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक गुणवत्ता निश्चित करने हेतु प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के परीक्षण एवं आंकलन के लिए समय–समय पर अनेक मानकों का प्रयोग किया गया है। जैसे–1. परीक्षण हेतु लिखित सत्र–परीक्षा और आंकलन हेतु इसके सापेक्ष *प्रतिशत–अंक* एवं कालान्तर में अनिवार्य *न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.)* 2. लिखित परीक्षा के साथ परियोजना, समूहचर्चा, उपस्थिति एवं ईकाई परीक्षा और आंकलन हेतु इसके सापेक्ष *बाहरी एवं आन्तरिक मूल्यांकन हेतु अलग–अलग प्रतिशत–अंकों का समावेशन* 3. रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्याकंन परीक्षण विधि एवं आंकलन हेतु इसके सापेक्ष *ग्रेडिंग*, और 4. वर्तमान में परीक्षण हेतु दो अर्द्धबार्षिक परीक्षाऐं एवं आंकलन हेतु निर्धारित *अधिगम परिणाम।* इनमें से प्रत्येक परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली के कुछ विशेष लाभ एवं इनकी कुछ सीमाऐं पायी गयी जिनके चलते इनमें सतत् सुधार एवं परिष्करण करते हुए इन्हें शिक्षा व्यवस्था में लागू करने के प्रयास किये गये हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान में इस प्रणाली का सबसे परिष्कृत रूप *"अधिगम परिणामों"* के रूप में सामने है। जिसे शैक्षिक सत्र 2017–18 से सम्पूर्ण भारत में प्राथमिक स्तर की शिक्षा व्यवस्था में लागू किया गया है। इसमें परीक्षणों हेतु दो अर्द्धबार्षिक परीक्षाऐं एवं आंकलन के लिए व्यावहारिक दक्षताओं के भागों के रूप में निर्मित अधिगम परिणामों को शामिल किया गया है जोकि व्यावहारिक कौशलों पर आधारित हैं। ये अधिगम परिणाम सुस्पष्ट और परिभाषित अपेक्षाओं के रूप में हैं जिससे विद्यार्थी इस बात से परिचित हो सकेंगे कि किस कक्षा में उन्हें किन–किन कौशलों को अर्जित करना है, तथा इन कौशलों को अर्जित करने के लिए उन्हें क्या करना है। अधिगम परिणाम प्रक्रिया आधारित हैं जोकि केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित न होकर विद्यार्थी के व्यावहारिक जीवन से भी जुड़े हुए हैं। अतः विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया जो विद्यालय के उपरान्त भी सदैव गतिमान रहती है उसमें भी विद्यार्थी इन अधिगम परिणामों की प्राप्ति को स्वयं में महसूस कर सकेंगें। उदाहरणार्थ– कक्षा 1 हेतु एक अधिगम परिणाम बच्चे सुनी हुई कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं, निर्धारित किया गया है। *(प्रारम्भिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल प्रारूप 2017)* जो इस स्तर के विद्यार्थियों हेतु एक व्याहारिक कौशल को प्रदर्शित करता है। इस अधिगम परिणाम से परिचित होने से कक्षा 1 के विद्यार्थी भी सुनी हुई कहानी, कविता आदि के बारे में आपस में बात करने तथा घर के सदस्यों से अपनी भाषा में बात करने को प्रोत्साहित होगें। इससे उनमें एक तरफ जहॉ सुनी हुई कहानी, कविता आदि के बारे में बात करने की जिज्ञासा का जन्म होगा तो दूसरी तरफ वे आपस में ऐसे बिन्दुओं पर बात करने हेतु आपसी तालमेल रखने को भी अहमियत देने लगेंगे। उनमें अपना पक्ष अपने साथियों के सामने रखने की भावना का विकास होगा तो साथी पक्ष को धैर्य पूर्वक सुनने के कौशल को भी वे अप्रत्यक्ष ग्रहण कर रहे होंगे। उनमें सुनी हुई कहानी, कविता आदि से सम्बन्धित प्रश्न पूछने व उनके उत्तर जानने की प्रवृत्ति का भी अंकुरण होगा। निष्कर्ष यह है कि परीक्षण एवं आंकलन हेतु निर्मित वर्तमान मानक "अधिगम परिणाम" वर्तमान की सभी अधिगम आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं एवं शैक्षिक–गुणवत्ता की सभी भविष्योन्मुखी सम्भावनाओं को भी समेटे हुए हैं।

कुंजी–शब्दः *परीक्षण एवं आंकलन, मानक, शैक्षिक–गुणवत्ता, अधिगम परिणाम।*

प्रस्तावना

प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली प्रगति को मापने का आधार परीक्षण एवं सम्बन्धित प्रगति को दर्शाने का आधार आंकलन होता हैं। परीक्षण वह विधि है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को मापा जाता है। यह मौखिक, लिखित अथवा प्रर्दशन पर आधारित हो सकती है उदाहरण– मौखिक परीक्षण में भाषण, साक्षात्कार, वाद–विवाद अथवा समूह चर्चा को शामिल कर सकते हैं। लिखित परीक्षण के उदाहरण में मुख्य रूप से पेपर–पेंसिल परीक्षण को शामिल किया जाता है, जिसमें आत्मनिष्ठ परीक्षण जैसे– विस्तृत उत्तरीय प्रश्न, निबन्धात्मक प्रश्न और लघु उत्तरीय प्रश्नों से निर्मित परीक्षण एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण जैसे– बहुविकल्पीय प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति, मिलान, सही–गलत आदि प्रमुख हैं। प्रर्दशन परीक्षण में दौड़, टंकण, प्रस्तुतीकरण, छायाचित्र निर्माण आदि परीक्षण सम्मिलित हैं। आंकलन में इन परीक्षणों पर प्राप्त प्रतिक्रिया से किन्हीं पूर्व निर्धारित मानकों के सापेक्ष विद्यार्थियों द्वारा की गयी प्रगति की वर्तमान स्थिति को दर्शाते हैं। जो उनकी शैक्षिक प्रगति का घोतक भी है।

प्रतिशत–अंकों के रूप में किये जाने वाले आंकलन में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को एक मानक प्रतिशत स्थिति के सापेक्ष उनके द्वारा अर्जित वर्तमान प्रतिशत के रूप में दर्शाया जाता है, उदाहरण– मौखिक अथवा लिखित परीक्षा में 100 प्रतिशत अंकों में से विद्यार्थियों द्वारा अर्जित 50 प्रतिशत–अंक, परीक्षा में पूछी जाने वाली जानकारी ही उनके द्वारा अर्द्ध–ज्ञानार्जन की स्थिति को दर्शाता है। प्रतिशतांक द्वारा किसी परीक्षा में पूछी जाने वाली जानकारी में प्राप्त प्रतिशत–अंक के आधार पर परीक्षा में सम्मिलित सभी व्यक्यिों के सापेक्ष व्यक्ति विशेषों द्वारा अर्जित की जाने वाली सापेक्षित स्थिति को दर्शाया जाता है। न्यूनतम अधिगम स्तर किसी विद्यार्थी द्वारा कम से कम एक निर्धारित स्तर तक अर्जित की जाने वाली अधिगम दक्षता की अनिवार्य सीमा को दर्शाता है। ग्रेडिंग में विद्यार्थियों को उनके सर्वागींण प्रदर्शन के आधार पर ग्रेड प्रदान किये जाते हैं। अधिगम संकेतक विद्यार्थियों के अधिगम हेतु संकेतकों के रूप में स्थापित किये गये मार्गदर्शी बिन्दुओं को प्रदर्शित करते है, तथा अधिगम परिणाम विद्यार्थियों की दक्षताओं के सूक्ष्म भागों के रूप में परिभाषित किये गये नवीनतम मानक हैं जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुसार ही उनका विकास करते हुए सन्दर्भ बिन्दुओं के रूप में परिभाषित इन व्यावहारिक कौशलों को प्राप्त करना है। *प्रतिशत प्रणाली* आंकलन की सबसे पुरानी प्रणाली है, इसकी शुरूआत लगभग 19वीं शताब्दी के तीसरे दशक से मानी जाती है, (तरल के.एस., 2015)। इसमें विद्यार्थी के शैक्षिक–प्रगति के परीक्षण हेतु सम्बन्धित सत्र के अन्त में लिखित अथवा मौखिक परीक्षा में आयोजन द्वारा विद्यार्थियों को अंक प्रदान किये जाते हैं तथा इन अंकों को कुल निर्धारित अंकों से प्रतिशत के रूप में बदलकर कक्षा में उसके द्वारा अर्जित की गयी सापेक्षिक प्रगति का ज्ञान कराया जाता है। प्रतिशत प्रणाली को परिष्कृत करने के अगले कदम के रूप में *बाहरी एवं आन्तरिक मूल्यांकन* के समावेश को कोठारी आयोग (1964–66) द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 4 तक के छात्रों का मूल्यांकन केवल आन्तरिक मूल्यांकन के रूप में करने को कहा गया जबकि प्राथमिक स्तर के अन्त में जिले स्तर पर बाह्य परीक्षा के आयोजन करने को कहा। आन्तरिक मूल्यांकन हेतु संचयी अभिलेखों

(क्यूमेलेटिव रिकॉर्ड्स) के प्रयोग का सुझाव दिया गया। संचयी अभिलेखों में हस्तकार्य आधारित परियोजना, पर्यावरण की साफ–सफाई सम्बन्धी समूहचर्चा, सम्पूर्ण सत्र में कक्षीय–उपस्थिति एवं ईकाई आधारित मौखिक परीक्षा के प्रतिशत–अंकों को जोड़कर मूल्यांकन करना शामिल है। 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आयी जिसमें प्राथमिक शिक्षा में कक्षा 1 से 5 में सभी विद्यार्थियों को समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्देश्य से *न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.)* के प्रत्यय को लाया गया। 1991 में एम.एल.एल. के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की रिपोर्ट एवं 1992 के प्रोग्राम ऑफ एक्शन में पुनः शैक्षिक गुणवत्ता को अनिवार्य बताते हुए न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल) को परिभाषित करके लागू करने के सुझाव दिये गये। तदानुसार एम.एल.एल. को प्राथमिक स्तर की शिक्षा में भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन विषयों के आंकलन हेतु मानकों में शामिल कर लिया गया, (एन.पी.ई., 1986 एण्ड पी.ओ.ए., 1992)। *सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)* को भी आंकलन के प्रभावी प्रयासों में शामिल किया गया। इसमें रचनात्मक मूल्यांकन के दौरान छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सुधार किया जाता है, जिसके लिए अनौपचारिक परीक्षण जैसे–अवलोकन, चर्चा (विद्यार्थियों से वार्ता) व मौखिक प्रश्नोत्तर आदि का प्रयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम को बेहतर करने हेतु पृष्ठपोषण देना है। जबकि योगात्मक मूल्यांकन में औपचारिक परीक्षणों जैसे– सत्र के अन्त में लिखित परीक्षा आदि के द्वारा उनकी योग्यता और प्रगति का आंकलन शामिल है। सी. सी.ई. को कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की प्रारम्भिक शिक्षा हेतु वर्ष 2008–09 में बच्चों में परीक्षा के तनाव को कम करके अधिगम पर जोर देने के लिए लाया गया। सत्र 2009–10 से इसे कक्षा 9 एवं 10 में भी लागू कर दिया, (पटेल, 2014)। *ग्रेडिंग–प्रणाली,* विद्यार्थियों के जानकारी स्तर एवं लेखन कौशल के स्थान पर विद्यार्थियों के व्यावहारिक एवं नैतिक कौशलों के विश्लेषण आदि को आंकलन में शामिल करने का एक प्रभावी तरीका है, इसमें आंकलन हेतु निर्धारित ग्रेड–श्रेणियों में प्रसार, प्रतिशत–अंकों से काफी अधिक होता है। अंकों के स्थान पर अक्षर संकेतों द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को बहुत अच्छा, अच्छा, औसत, औसत से कम एवं सुधार अपेक्षित है, आदि में विभाजित किया जाता है। प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक आंकलन हेतु वर्ष 2014 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा *"लर्निंग इंडीकेटर्स एण्ड लर्निंग आउटकमस एट द ऐलीमेंट्री स्टेज"* नामक मानक लाया गया, जिसमें प्रारम्भिक स्तर हेतु पाठ्यक्रम सम्बन्धी अपेक्षाओं एवं सीखने के संकेतकों को दर्शाया गया। *अधिगम संकेतक* प्रारम्भिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम परिणामों में सुधार पर केन्द्रित करके निर्मित किये गये हैं। *'अधिगम परिणाम'* शैक्षिक–गुणवत्ता को ध्यान में रखकर, व्यवहार परिमार्जन के रूप में परिभाषित वे सन्दर्भ बिन्दु हैं, जिनके सापेक्ष विद्यार्थियों को अधिगम करना निर्धारित है, तथा इन्हें विषयवार एवं कक्षावार विद्यार्थियों की क्षमता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। ये प्रक्रिया आधारित हैं, अतः केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित न होकर जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से भी व्यावहारिक कौशलों को अर्जित करने एवं उनमें परिमार्जन करने से जुड़े हैं।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

पटेल, जे.पी. (2014) ने *ग्रेडिंग प्रणाली* पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य ग्रेडिंग प्रणाली की अवधारणा को स्पष्ट करना और इस प्रणाली के औचित्य पर चर्चा करना रहा। अध्ययन में इन्होंने बताया कि ग्रेडिंग प्रणाली बच्चों के सर्वांगीण विकास की अवधारणा को अधिक महत्व देती है। इन्होंने इस प्रणाली की कमी को इंगित करते हुए कहा कि इस प्रणाली में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की अधिगम–तीव्रता में अवरोध आता है। अत्यधिक प्रसार प्रतिशत जैसे– 80 से 100 तक अंक वाले विद्यार्थियों को समान ग्रेड मिलने से भविष्य में उनके चयन को निर्धारित करने में मुश्किल भी बढ़ाती हैं।

व्यास, एच.एस. (2014) ने प्रबन्धन शिक्षा में व्यापत चुनौतियों पर किये अपने अध्ययन में *आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली की कमियों* को उजागर करते हुए बताया कि 25 प्रतिशत से अधिक अंक शिक्षकों के हाथ में होने से कोई विद्यार्थी शिक्षकों के शैक्षिक रूप से लापरवाह होने बाद भी उनकी कमियों को सामने नहीं ला पाता है, तथा इन अंकों को खो देने के डर से व्यवस्था के बदहाल होने के बाद भी शैक्षिक प्रक्रिया को जस के तस चलने देने का दबाव महसूस करता है।

फैंक क्वैन्शाह (2018) ने *पारम्परिक अथवा प्रदर्शन आधारित आंकलन* पर किये गये अध्ययन में बताया कि आंकलन का उद्देश्य, आंकलन के तरीके को चुनने में अहम भूमिका में होता है। शैक्षिक प्रगति के कुछ ऐसे पक्ष है जिनका मूल्यांकन केवल परीक्षा पद्धति से किया जाना अनिवार्य है जैसे– पारम्भिक साहित्यिक ज्ञान और उसके स्वरूप की जानकारी लेना, नियमों एवं सिद्वान्तों के ज्ञानात्मक पक्षों का परीक्षण, तथ्यात्मक, तुलनात्मक जानकारी हेतु परीक्षण आदि। इसके विपरीत व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के मूल्यांकन हेतु प्रदर्शन आधारित आंकलन का प्रयोग किया जाना परिहार्य है।

बैरी एट ऑल (2018) ने हरियाणा राज्य में *सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की विफलता* के कारणों का अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने बताया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को विभिन्न देशों में लागू किया गया है। जिनमें शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावकों को विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति पर समय–समय पर पृष्ठपोषण देने का प्रावधान है। इसके दौरान शोधकर्ताओं ने हरियाणा राज्य के 500 प्राथमिक विद्यालयों में भाषा एवं गणित के प्राप्तांको पर इस प्रणाली का प्रभाव देखा एवं पाया कि विद्यार्थी के अधिगम प्राप्तांकों पर इस नवीन उपागम के प्रयोग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं मिला है, और यह प्रयोग अधिगम परिणामों में सुधार हेतु पूर्णतः विफल रहा है।

जैन, एम. (2020) ने *भारतीय शिक्षा प्रणाली की असफलताओं* पर अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने बताया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में कौशल निर्माण और दक्षताओं के विकास से कही अधिक, अर्जित किये जाने वाले अधिकाधिक अंकों पर बुरी तरह जोर देती है। विद्यार्थियों के आंकलन हेतु अब तक निर्धारित किये गये सभी मानक, अंकों अथवा ग्रेड़ों के रूप में स्मरणीय प्रत्ययों और रटन्त क्षमता को परिभाषित करते हैं न कि अर्जित व्यावहारिक कौशलों को। विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा दोनों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम एवं अन्य

सभी आयोजन, केवल कुछ परीक्षाओं विशेष में उत्तीर्ण होकर एक नौकरी पाने के इर्द–गिर्द घूमता है, जबकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास द्वारा कुछ नया सीखने अथवा करने को द्वितीयक (गौण) बना देता है।

धनंजय, ए. (2021) ने भारत में मानकीकृत परीक्षणों के सन्दर्भ में पड़ने वाले दबाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य उच्च–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अच्छा प्रदर्शन करने के दबाव, तनाव और प्रेरणा के सन्दर्भ में उनके अनुभवों का अध्ययन करना था। अध्ययन में इन्होंने पाया कि मानकीकृत परीक्षाओं में अधिकाधिक अंक हासिल करने में विद्यार्थी अत्यधिक दबाव एवं तनाव महसूस करते हैं। यद्यपि विद्यार्थियों के अनुसार घर से पड़ने वाला दबाव, उनकी अधिगम संप्राप्ति में धनात्मक भूमिका निभाता है। भाई बहनों से कम प्रतिशत–अंक आने की चिंता भी उन्हें अधिक अंक अर्जित करने हेतु प्रेरित करती है, तथापि ऐसा न कर पाने की चिंता से उन्हें अत्यधिक तनाव का सामना भी करना पड़ता है।

मेलानी, आर (2024) ने शिक्षा में आंकलन एवं मूल्यांकन हेतु परम्परागत और आधुनिक उपागमों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए बताया कि परम्परागत उपागम योगात्मक मूल्यांकन पर केन्द्रित हैं जबकि आधुनिक उपागम अधिगर्मा कर्ता की प्रगति के निरन्तर पृष्ठपोषण की सहायता से किये रचनात्मक मूल्यांकन द्वारा उनकी अधिगम वृद्धि पर केन्द्रित होते हैं। परम्परागत मूल्यांकन एवं आंकलन अकादमिक बोध एवं स्मृति क्षमता पर अधिक जोर देते हैं। आधुनिक उपागम समस्या–आधारित अधिगम एवं परियोजना (प्रोजेक्ट) आधारित अधिगम पर केन्द्रित होकर जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में अधिगम पर जोर देते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

हम कैसे सीखते हैं ये जानने का सबसे बेहतर जरिया प्राथमिक शिक्षा ही है। क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थियों में कोई बाहरी दिखावा या अनुकूलन नहीं होता। सीखने के प्रक्रिया का सबसे शुद्ध रूप इसी अवस्था में सामने आता है। जैसे जैसे हम बड़े होते जाते हैं हमारे सीखने की प्रक्रिया जटिल होती जाती है साथ ही उसका अवलोकन भी कठिन हो जाता है। शैक्षिक प्रक्रिया में अधिगम–दर की सबसे तीव्र गति भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा के समय ही होती है, क्योंकि औपचारिक रूप से सीखने के लिए इस समय विद्यार्थी सर्वाधिक आत्मकेन्द्रित एवं एक कोरी स्लेट की भांति होता है। साथ ही इस स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति व उसका आंकलन उसके द्वारा भविष्य में अर्जित की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर एवं उसकी जीवन में सफलता दोनों का निर्धारण करता है। अतः हमारे समक्ष इस शैक्षिक प्रगति के परीक्षण के ढ़ग एवं उसके आंकलन हेतु निर्धारित मानकों दोनों का बिल्कुल स्पष्ट रूप में होना अनिवार्य है। जिससे सभी विद्यार्थी न केवल गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा को ग्रहण कर सकें बल्कि तदानुसार उनके सफल नागरिक बनने की मजबूत नींव भी पड़ सकें। इसके अतिरिक्त हम विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को समझकर उसमें गुणवत्ता व तेजी भी ला सकें। परीक्षण एवं आंकलन के तरीकों को समझते हुए उन्हें सीखने के अनुरूप बना सकें जिससे शैक्षिक गुणवत्ता की वास्तविक शैक्षिक–प्रगति सम्भव हो सके।

प्रत्येक व्यक्ति को पूर्व एवं वर्तमान दोनों समय में प्रयोग होने वाली परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली से भली–भॉति परिचित होना चाहिए जिससे वे न केवल स्वंय के आंकलन को समझ सकें बल्कि आवश्यतानुसार

दूसरों का परीक्षण एवं आंकलन भी दक्षतापूर्वक करने में सक्षम हो सकें। इसके अतिरिक्त हम सभी को अब तक आयी सभी आंकलन प्रणालियों की कमजोरियों एवं मजबूत पक्षों की जानकारी भी होनी चाहिए, जिससे हम वर्तमान की आवश्यतानुसार सर्वोत्तम प्रणाली का चयन करके व्यक्तियों की प्रतिभा एवं कौशलों का आंकलन कर सकें। सही आंकलन प्रणाली ही किसी व्यक्ति के वास्तविक कौशल के ठीक–ठीक आंकलन द्वारा उसे वास्तविक प्रगति का पथ प्रदर्शन करके उस ओर जाने को अग्रसर कर सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य *"प्राथमिक स्तर पर भारतीय शिक्षा में वर्तमान परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली का अध्ययन करना"* है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक प्रदत्त विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु शोधार्थी ने विभिन्न शोध पत्रिकाओं, शोध–लेखों, सम्बन्धित शिक्षा नीतियों से सम्बन्धित दस्तावेजों एवं पाठ्यचर्या–रूपरेखाओं का अध्ययन किया है।

परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली का विश्लेषण

1. भारतीय शिक्षा में प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता हेतु परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के सापेक्ष समय–समय पर अनेक परीक्षण विधियों एवं आंकलन मानकों का प्रयोग किया गया है। जैसे–1. परीक्षण हेतु लिखित सत्र–परीक्षा और आंकलन हेतु इसके सापेक्ष पहले *प्रतिशत–अंक* एवं कालान्तर में अनिवार्य *न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.)* 2. लिखित परीक्षा के साथ परियोजना, समूहचर्चा, उपस्थिति एवं ईकाई परीक्षा आदि और आंकलन हेतु इसके सापेक्ष *बाहरी एवं आन्तरिक मूल्यांकन* का समावेशन 3. रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्याकंन परीक्षण विधि एवं आंकलन हेतु इसके सापेक्ष *ग्रेडिंग,* और 4. वर्तमान में परीक्षण हेतु दो अर्द्धबार्षिक परीक्षाऐं एवं आंकलन हेतु निर्धारित *अधिगम परिणाम।*
2. प्रतिशत–प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण लाभ सभी विद्यार्थियों की एक दूसरे के सापेक्ष स्पष्ट एवं वास्तविक प्रगति का आसानी से ज्ञान कराना है। परन्तु इस प्रणाली में विद्यार्थियों के केवल लिखित कौशल एवं रटन्त प्रत्ययों का ही मूल्यांकन सम्भव है, तथा अधिगम के व्यावहारिक पक्षों का मूल्यांकन प्रायः इसमें शामिल नहीं हो पाता। अतः इस प्रणाली में सुधार की शुरूआत हुई।
3. परीक्षण एवं आंकलन में प्रतिशत–अंकों के वर्गीय विभाजन के रूप में बाहरी एवं आन्तरिक दोनों मूल्यांकन के समावेश के मानक के रूप में आने से विद्यार्थियों पर सत्र के अन्त में होने बाली परीक्षाओं में अधिकाधिक अंक अर्जित करने एवं स्मरणीय प्रत्यय पर केन्द्रित रहने का दबाव आंशिक रूप से कम हुआ। विद्यार्थियों के अन्य विद्यालयी गतिविधियों में शामिल होने से उनके व्यावहारिक पक्षों के मूल्यांकन को भी आंशिक अहमियत मिलना प्रारम्भ हुई। परन्तु इन व्याहारिक पक्षों पर प्रमुख छाप उनके परिवारिक

वातावरण एवं परिवेश की दिखाई देती है न कि उनके शैक्षिक वातावरण में हुए अधिगम की। व्यास (2014) के अनुसार आंतरिक मूल्यांकन के एक बड़े प्रतिशत अंकों का निर्धारण भी शिक्षक के हाथ में आ जाना भी उसके पक्षपाती एवं निरंकुश होने को प्रोत्साहित करता है जिससे शिक्षकों द्वारा शैक्षिक लापरवाही बरतने पर भी विद्यार्थियों द्वारा केवल इसे सहते रहने की सम्भावना बन गई।

4. न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल) विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी विद्यार्थियों के लिए एक निश्चित स्तरीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अनिवार्य रूप से हासिल किये जाने वाले शैक्षिक मानकों के रूप में शामिल किये गये। जिन्हें विद्यार्थी प्रत्येक कक्षा में "कम से कम इतना तो अवश्य हासिल कर ही लें" के रूप में लागू किया गया। एम.एल.एल. पारंगतता अधिगम (मास्टरी लर्निंग) पर आधारित थे। जिसमें विद्यार्थियों को पारंगत स्तर (मास्टरी लेवल), लगभग पारंगत स्तर के करीब (नियर मास्टरी लेवल), एवं गैर–पारंगत स्तर (नॉन मास्टरी लेवल) में वर्गीकृत करके उनका आंकलन किया जाता है, तथा शिक्षकों के लिए भी विद्यार्थी को पारंगत स्तर तक लाने के आयोजन करना अनिवार्य किये गये। न्यूनतम अधिगम स्तर उत्पाद आधारित अन्तिम लक्ष्यों के रूप में आये तथा बालकों के अधिगम को एक शैक्षिक सत्र में न्यूनतम स्तर तक की निश्चित स्थिति तक लाने की अनिवार्यतः को दर्शाते हैं। अतः ये बालमनोविज्ञान के अनुरूप विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं रूचि से सम्बन्ध नहीं रखते। इसके अतिरिक्त ये एनसीएफ 2005 में वर्णित बालकों के स्वयं ज्ञान के निर्माण करने की संकल्पना पर भी खरे नहीं उतरते।
5. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रत्यय ने वर्ष के अन्त में एक बार होने वाली परीक्षण प्रणाली को बदलकर वर्ष भर विद्यार्थियों के आंकलन करने को प्रोत्साहित किया। इसे कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की प्रारम्भिक शिक्षा हेतु वर्ष 2008–09 में बच्चों में परीक्षा के तनाव को कम करके अधिगम पर जोर देने के लिए लाया गया। सत्र 2009–10 से इसे कक्षा 9 एवं 10 में भी लागू कर दिया, (पटेल, 2014)। बैरी एट ऑल (2018) के अनुसार इस प्रणाली में प्रमुख कमी शिक्षण प्रविधियों को सुधारे बिना ही विद्यार्थियों का एक ही सत्र में कई बार मूल्यांकन पर अधिक जोर देना है।
6. ग्रेडिंग को मानकों के रूप में स्थापित करने का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष बच्चों के मध्य परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर भेदभाव की भावना को कम करना है। विद्यार्थियों में उच्च अकादमिक प्रतिशत अंक लाने का दबाब की अनुपस्थिति में अधिक अकादमिक निपुणता हासिल करने के प्रत्यय को अत्यधिक बल मिलता है। इस प्रणाली में पाठ्यसहगामी क्रियाओं के समागम, बच्चों में अध्यापकों के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत करने, वार्तालाप करने एवं विद्यालयी गतिविधियों में अधिकाधिक भागीदारी को सुनिश्चित करता है। इससे विद्यार्थी के सार्वांगीण विकास की अवधारणा को बल मिलता है। विद्यार्थियों के मध्य आपसी सहयोग व समरसता की भावना विकसित करता है। पटेल (2014) के अनुसार इस प्रणाली में विद्यार्थियों के आंकलन को पॉच श्रेणियों में ही विभाजित होने से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान एवं उन्नयन मुश्किल आती है।

7. अधिगम संकेतक अधिगम परिणामों पर ही आधारित हैं। अधिगम संकेतकों से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी क्या सीखे हुए हैं, अथवा वे किस बात में निपुण हैं। परन्तु पाठ्यचर्या से क्या सीखना है और कितना सीखना है, इसके लिए ये संकेतक अधिगम परिणामों का ही सहारा लेते हैं। अतः व्यवहार परिवर्तन का मापन तो अधिगम संकेतकों से किया जा सकता है परन्तु व्यवहार में परिवर्तन क्या और कैसे करना है? इस बारे में कोई जानकारी नहीं देते। जैसे– विद्यार्थी को अक्षरों का ज्ञान है अथवा नहीं। ये अधिगम संकेतकों का उदाहरण है तथा विद्यार्थी अक्षरों को पहचानते हैं उन्हें लिख पाते हैं, आदि अधिगम परिणामों के उदाहरण है।
8. अधिगम संकेतकों के परिष्कृरण के फलस्वरूप एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा वर्ष 2017 में परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली का सबसे नवीनतम प्रयास अधिगम परिणामों के रूप में *"प्राथमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल"* नाम से विकसित किया गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्राथमिक स्तर पर भारतीय शिक्षा में समय–समय पर विद्यमान परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली के उपरोक्त विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं–

1. ये परीक्षण और आंकलन प्रणाली हेतु निर्धारित मानक ही हैं जो हमारी विद्यालयी शिक्षा प्रणाली एवं शैक्षिक गुणवत्ता को दिशा देते आये हैं और भविष्य में भी देते रहेंगें। वर्तमान में ऐसे मानकों की आवश्यकता है जिनमें बालमनोविज्ञान एवं इसके अनुसार कौशलों की जॉच का समावेश अनिवार्य हो। जिससे हमारे परिवेश का प्रत्येक नागरिक अकादमिक रूप से पढ़ना, प्रत्ययों को रटना, परीक्षादेना, विस्मृति, पुनः तैयारी करना, पुनः परीक्षा देना और पुनः रटन्त सामग्री को भूल जाना। इस परीक्षण चक्र के भंवर से बाहर निकलकर कौशलों को अर्जित करके भारत निर्माण में अपना अभूतपूर्व योगदान कर सके। जैन, एम. (2020) ने भी इस बात का समर्थन किया है।
2. मानकों के निर्धारण में रटन्त पद्धति के अत्यधिक महत्व के विद्यमान रहते आज भी ये कटु सत्य ही है कि एक पदाधिकारी अथवा चयनित प्रोफेसर जो पिछली वर्ष आयोजित परीक्षा के आधार पर चयनित होकर आया है, पुनः उसी स्तर पर अगले वर्ष आयोजित होने वाली परीक्षा को पास भी कर सकेगा, यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। क्योंकि शिक्षा के सभी स्तरों पर शैक्षिक प्रगति का आधार आज भी कौशलों का प्रदर्शन न होकर रटन्त तथ्यों एवं प्रत्ययों का प्रत्यास्मरण मात्र ही है। अतः इसमें परिवर्तन अनिवार्य है।
3. परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली में मानकों के रूप में स्थापित प्रतिशत–अंकों का प्रमुख सरोकार एवं लाभ, नौकरी में चयन हेतु विद्यार्थियों में विभेद करके उनमें से सर्वोत्तम के चयन से रहा है न कि अधिगम की कुशलता से। हमारी सम्पूर्ण शिक्षा–प्रणाली ही इसी के चारो ओर घूमती रही है।

4. पूरे वर्ष के अध्ययन एवं अर्जित कौशलों की परीक्षा केवल 3 घंटे में एक ही बार वर्ष के अन्त में कराकर आंकलन करने से सम्बन्धित सभी निर्धारित मानकों जैसे–प्रतिशत–अंकों एवं न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल) में केवल स्मरणीय क्षमता एवं प्रत्यास्मरण की जॉच को महत्व दिया जाता रहा है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अन्य पक्षों के विकास के अवसर बने एवं उनका आंकलन भी अनिवार्य हो जो अब तक अवरूद्ध ही रहे हैं। (फैंक क्वैन्शाह, 2018) और (धनंजय, ए., 2021) ने भी इस बात में सहमति दर्ज की है।
5. आन्तरिक मूल्यांकन एवं सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) प्रणाली द्वारा परीक्षण एवं आंकलन करने से विद्यार्थियों में सहभागिता, समरसता एवं स्वयं को प्रदर्शित करने आदि गुणों के प्रदर्शन के अवसर तो बने, परन्तु शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अध्यापकों की लापरवाही अथवा उनके प्रभुत्व का आ जाने से न तो शिक्षकों की शिक्षण विधियों एवं तरीकों में कोई सुधार हुआ और न ही विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों में अपेक्षित सुधार हो सका। बैरी एट ऑल (2018) ने भी इस बात का पुरजोर समर्थन किया है। साथ ही शिक्षकों की यह प्रवृत्ति गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने में बड़े अवरोध उत्पन्न करती रही है। मेलानी, आर (2024), एवं व्यास, एवं एच.एस. (2014) भी इस बात पर जोर देते हैं।
6. उपरोक्त विश्लेषण में प्रत्येक परीक्षण हेतु निर्धारित परीक्षा एवं आंकलन हेतु निर्धारण मानकों के कुछ विशेष लाभ एवं इनकी कुछ सीमाऐं पायी गयीं, जिनके चलते इनमें सतत् सुधार एवं परिष्करण करते हुए शिक्षा व्यवस्था में लागू करने के प्रयास किये गये हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान में परीक्षण एवं आंकलन प्रणाली का सबसे परिष्कृत रूप *"अधिगम परिणामों"* के रूप में हमारे समक्ष है। जिसे शैक्षिक सत्र 2017–18 से प्राथमिक स्तर की शिक्षा व्यवस्था में लागू किया गया है।
7. अधिगम परिणामों के परीक्षणों का स्वरूप दो अर्द्धबार्षिक परीक्षाऐं एवं आंकलन हेतु व्यावहारिक दक्षताओं के भागों के रूप में निर्मित अधिगम परिणामों को निर्धारित किया गया है जोकि व्यावहारिक कौशलों पर आधारित हैं। वर्तमान में इनकी प्राप्ति सम्बन्धी सामयिक जॉच होने की आवश्यकता है।
8. अधिगम परिणाम सुस्पष्ट और परिभाषित अपेक्षाओं के रूप में हैं जिससे विद्यार्थी इस बात से परिचित हो सकेंगे कि किस कक्षा में उन्हें किन–किन कौशलों को अर्जित करना है।
9. अधिगम परिणाम प्रक्रिया आधारित हैं जोकि केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित न होकर विद्यार्थी के व्यावहारिक जीवन से भी जुड़े हुए हैं अतः विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया जो विद्यालय के उपरान्त भी सदैव गतिमान रहती है उसमें भी विद्यार्थी इन अधिगम परिणामों की प्राप्ति को स्वयं में महसूस कर सकेंगें। उदाहरणार्थ– कक्षा 1 हेतु एक अधिगम परिणाम बच्चे सुनी हुई कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं, निर्धारित किया गया है। *(प्रारम्भिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल प्रारूप 2017)* जोकि इस स्तर के विद्यार्थियों हेतु एक व्याहारिक कौशल को प्रदर्शित करता है। इस अधिगम परिणाम से परिचित होने से कक्षा 1 के विद्यार्थी भी सुनी हुई कहानी,

कविता आदि के बारे में आपस में बात करने तथा घर के सदस्यों से अपनी भाषा में बात करने को प्रोत्साहित होगें। इससे उनमें एक तरफ जहॉ सुनी हुई कहानी, कविता आदि के बारे में बात करने की जिज्ञासा का जन्म होगा तो दूसरी तरफ वे आपस में ऐसे बिन्दुओं पर बात करने हेतु आपसी तालमेल को भी अहमियत देने लगेंगे। उनमें अपना पक्ष अपने साथियों के सामने रखने का भावना की विकास होगा तो दूसरे के पक्ष को धैर्य पूर्वक सुनने के कौशल को भी वे अप्रत्यक्ष ग्रहण कर रहे होंगे। उनमें सुनी हुई कहानी, कविता आदि से सम्बन्धित प्रश्न पूछने व उनके उत्तर जानने की प्रवृत्ति का भी अंकुरण हो जायेगा।

10. अन्त में हम यह कह सकते हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक स्तर पर परीक्षण एवं आंकलन हेतु निर्मित वर्तमान मानक "अधिगम परिणाम" वर्तमान की सभी अधिगम आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं, एवं शैक्षिक–गुणवत्ता की सभी भविष्योन्मुखी सम्भावनाओं को भी समेटे हुए हैं।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. Berry,J.; Kannan,H.; Mukherji,S.; and Shotland,M. (2018).Failure of Frequent Assessment: An Evaluation of India's Continuous and Comprehensive Evaluation Program. Retrieved from https://www.povertyactionlab.org/sites/default/files/research-paper/Failure-of-Frequent-Assessment_berry_kannan_mukherji_shotland_Nov2018.pdf
2. Dhananjay A.(2021). Pressures Regarding Standardized Tests in India. Thesis for Master of Education in Educational Leadership, Vancouver Island University. https://www.viurrspace.ca/server/api/core/bitstreams/cf6d7476-665b-4997-bbbd-dffc7b3c2976/content
3. Jain M. (2020). A study of India's Failing Education System. XXI Annual International Conference Proceedings; January 2020 pp 138-149. https://www.internationalconference.in/XXI_AIC/TS3/MsManyaJain.pdf
4. Lal, R.B. & Sharma, K.K. (2021). Bhartiya shiksha ka itihas, vikas evam samasyain. R. Lal Book Depot, Meerut. Pp 272-273.
5. M.L.L. (1991). A Report of Ministry of Human Resources Development. NCERT, New Delhi. http://14.139.60.153/bitstream/123456789/141/1/Report-Minimum%20levels%20of%20learning%20at%20Primary%20Stage-5809.pdf
6. Meylani, R. (2024). A comparative analysis of traditional and modern approaches to assessment and evaluation in education. Western Anatolia Journal of Educational Sciences, 15(1), 520-555. DOI. 10.51460/baebd.1386737
7. Patel, J.P.(2014). Grading System. International Journal for Research in Education. Vol. 3,Issue 2, pp 14-19. Retrieved from https://www.raijmr.com/ijre/wp-content/uploads/2017/11/IJRE_2014_vol03_issue_02_04.pdf
8. Quensha, F. (2018). Traditional or performance assessment: What is the right way in Assessing learners. *Research on Humanities and Social Sciences, Volume 8, no.1*. pp 21-24.
9. N.C.E.R.T. (2017). *Prarambhik Star par Sikhne ke Pratifal.* MHRD, New Delhi. Retrieved on October 1, 2021 from https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Learning_Outcomes%E2%80%93Hindi.pdf